SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-V
By- Dr. Ramendra Kumar Singh.
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU. Ara

मनोवृत्ति परिवर्तन
THE CHANGING OF ATTITUDES

मनोवृत्ति एक अर्जित गुण है, और इसका स्वरूप गत्यात्मक (Dynamic) होता है। इस पर समाज, संस्कृति, संस्था आदि का प्रभाव पड़ता है। अतः मनोवृत्ति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। ऐसी हालत में पुरानी मनोवृत्तियाँ बदलती हैं और नई प्रवृत्तियाँ बनती है। यह प्रक्रिया जारी रहती है। इसमें दो प्रकार की परिवर्तने होती हैं:-

(A) मात्रात्मक परिवर्तन (Congruent change)
(B) दिशात्मक परिवर्तन (Incongruent change)

मात्रात्मक परिवर्तन से तात्पर्य मनोवृत्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तनों से है, जबकि, दिशात्मक परिवर्तन में मनोवृत्ति की दिशा का बदल जाना है। जैसे नाकारात्मक मनोवृत्ति का सकारात्मक दिशा हो जाना मनोवृत्ति की दिशा परिवर्तन है; इसी तरह मात्रात्मक परिवर्तन में मनोवृत्ति (सकारात्मक या नकारात्मक) की प्रबलता की मात्रा में केवल बदलाव आ जाता है, ऐसा परिवर्तन दिशात्मक परिवर्तन की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है।

अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि- "मनोवृत्ति परिवर्तन से तात्पर्य वर्तमान मनोवृत्ति की दिशा अथवा मात्रा या, दोनों में होनेवाले परिवर्तनों से है।"

मनोवृत्ति में होनेवाला परिवर्तन अथवा परिमार्जन, अभियोजन

तथा राष्ट्र एवं समाज की प्रगति के लिए अति आवश्यक है

अब प्रश्न उठता है, कि मनोवृत्ति में परिवर्तन अथवा बदलाव किन किन परिस्थितियों में होता है। इस संदर्भ में किये गये अध्ययनों से पता चलता है कि सारी परिस्थितियाँ समान रहने पर भी मनोवृत्ति की मात्रात्मक परिवर्तन दिशात्मक परिवर्तन की तुलना में अधिक होती है। मनोवृत्ति परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक या स्थितियाँ निम्नलिखित हैं :-

(1.) अतिरिक्त सूचना :- मनोवृत्ति परिवर्तन पर औपचारिक एवं अनौपचारिक सूचनाओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें शिक्षा प्रचार के अन्य स्रोतों जैसे रेडियो, टी० वी०, मोबाईल, अखबार आदि से प्राप्त अतिरिक्त सूचनाओं के अलावे अनौपचारिक सूचनाएँ यथा बातचीत से, परिवार के लोगों से, सम्बन्धियों आदि से प्राप्त मौखिक सूचनाओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसे परिवार नियोजन के विषय में बार-बार प्रसारित सूचनाएँ हमारे मनोवृत्ति में मात्रात्मक एवं दिशात्मक बदलाव लाने में कामयाब रही हैं।

मनोवृत्ति परिवर्तन में सूचनाओं का प्रभाव किस हद तक पड़ता है, यह सूचना के स्वरूप, प्रचारक की विश्वसनीयता तथा प्रचार के माध्यमों की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता पर निर्भर करता है।

(2.) बढ़ती हुई घनिष्ठता :- जैसे-जैसे व्यक्ति की घनिष्ठता दूसरे संस्था या व्यक्ति से बढ़ती है, वैसे-वैसे उसके विषय में स्पष्ट जानकारियाँ मिलने लगती हैं और पूर्व की मनोवृत्ति में बदलाव आने लगता है। थर्स्टन ने इस संदर्भ में एक प्रयोग स्कूली बच्चों को पाँच समूहों में बाँटकर किया। चार समूह के बच्चों को सिनेमा बार-बार दिखलाया गया जो दूसरे समाज के लोगों से सम्बन्धित था। उस तरह की तीन सिनेमा दिखाया गया। पाँचवे समूह के बच्चों को कोई सिनेमा नहीं दिखाया गया। परिणाम में देखा गया कि तीनों समूह के बच्चों

की मनोवृत्तियों में काफी बदलाव आ गया था, उन बच्चों की तुलना में जिन्हें कोई भी सिनेमा नहीं दिखाया गया था।

(3) स्पष्ट अनुभव :- किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के सम्बन्ध में स्पष्ट व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त होने पर मनोवृत्ति उसके प्रति बदल जाती है। कई बार देखा गया है कि Attitude formation दूसरों के द्वारा कही या सुनी सुनाई बातों से हो जाती है, जो तथ्यों पर आधारित नहीं होती हैं; लेकिन जैसे ही आदमी उसके सम्पर्क में जाता है, कुछ अलग अनुभूति होती है और Attitude बदल जाती है। Smith ने इस संदर्भ में बड़ा ही रोचक अध्ययन Negro एवं white लोगों पर किया। कुछ कालेज के बच्चों को अमरीकी Negro के शहर में कुछ समय रखा गया जो काफी शिक्षित थे। देखा गया कि उन गोरे छात्रों की Attitude Negro के प्रति बदल गई थी।

(4) कालेज, स्कूल आदि शैक्षिक संस्थाओं का प्रभाव :- मनोवृत्ति परिवर्तन में शैक्षणिक संस्थाओं का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। स्कूल, कालेजों में कई जातियों एवं समुदायों के बच्चे पढ़ते हैं; एक दूसरे को जानने एवं समझने का मौका उन्हें मिलता है। इससे मनोवृत्ति में बदलाव आता है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा से प्राप्त ज्ञान कई तरह की सूचनाओं को ठीक कर देता है। इससे Attitude में बदलाव आता स्वाभाविक हो जाता है। इस संदर्भ में Newcomb तथा Likert आदि ने भी अपने अध्ययनों से इस बात का समर्थन किया है।

(5) समूह सम्बन्धन में परिवर्तन :- जब व्यक्ति एक समूह से हटकर दूसरे समूह से Affiliation प्राप्त करता है तो उसकी मनोवृत्ति दूसरे समूह के प्रति बदल जाती है। दूसरे समूह के Values एवं Norms को अपनाता है जिससे Attitude में परिवर्तन आ जाती है।

(6) समुदाय का प्रभाव :- व्यक्ति जिस समुदाय का सदस्य होता है, उस समुदाय की मानदण्डों को अपनाता है और उसी अनुरूप उसकी मनवृत्ति बनती है। ठीक उसके बदलाव में भी उस समुदाय का प्रभाव उसी अनुरूप पड़ता है।

(7) प्रचार तथा यातायात :- प्रचार की प्रवृत्तियों का प्रयोग करके भी मनोवृत्ति में बदलाव लाया जा सकता है। चलचित्र, मौखिक वार्तालाप आदि भी Attitude change लाते हैं। इसी तरह यातायात के जरिए एक दूसरे से सम्पर्क बनाने में सहूलियत होती है और Attitude change की भूमि तैयार करती है।

(8) महान व्यक्तित्व का प्रभाव :- महान व्यक्तित्व के सम्पर्क में आने से भी मनोवृत्ति में बदलाव आती है। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव कहा जायेगा कि हरिजनों के प्रति अछूतों के प्रति तथाकथित ऊँच वर्ग के लोगों की मनोवृत्तियों में पर्याप्त बदलाव आ गया है। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली एवं प्रसिद्ध व्यक्ति के प्रभाव में आकर लोगों की मनोवृत्ति बदल जाती है। यही कारण है कि बड़ी-बड़ी हस्तियों, सिनेमा स्टार्स द्वारा कम्पनियाँ अपनी Products के प्रति लोगों की Positive attitude बनाने में सफल हो जाती है।

(9) तकनीक परिवर्तन :- तकनीक परिवर्तन एवं मनोवृत्ति परिवर्तन में गहरा सम्बन्ध है। यह देखा गया है कि तकनीक परिवर्तन से नये-नये आविष्कार हुए, सूचनाएँ आने लगी जिससे विकास होता गया और मनोवृत्तियों में बदलाव आया है। आज दुनिया के पास एटम बॉम्ब, हाईड्रोजन बम है जिससे चलते जनता की मनोवृत्ति में बदलाव आया है। आज कोई भी युद्ध नहीं चाहता है। आर्गवत ने अपने अध्ययनों में पाया कि तकनिक परिवर्तन के चलते ही आज महिलाएँ सशक्त हो रही हैं, उनके प्रति पुरुषों की मनोवृत्तियाँ बदल रही हैं। पितृसत्तात्मक प्रभाव कम हो रही है।

(10) व्यक्तित्व परिवर्तन की प्रविधियाँ :- वर्तमान समय में मनोवृत्ति परिवर्तन में लोगों की व्यक्तित्व में बदलाव लाने पर जोर दिया जा रहा है। व्यक्तित्व संरचना में बदलाव आ जाने पर व्यक्ति की मनोवृत्तियों में स्थाई

तौर पर बदलाव आजाने की संभावनाएँ प्रबल होती हैं। सेक्सटस (1948) ने प्रजातीय मनोवृत्ति से ग्रस्त बालकों में Play therapy के माध्यम से पर्याप्त बदलाव लाया। बालकों में नीग्रो के प्रति बदलाव देखा गया। हलांकि कुछ अध्ययन अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी किया गया जो बहुत इससे सहमत नहीं हैं।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मनोवृत्ति एक अर्जित-प्रवृत्ति है जो गत्यात्मक स्वरूप की होती है, उपर्युक्त तरीकों से मनोवृत्तियों में बदलाव लाया जा सकता है। मनोवृत्तियों, खासकर नकारात्मक मनोवृत्तियों में बदलाव लाकर समाज को समृद्ध किया जा सकता है, राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। मनोवृत्ति परिवर्तन समायोजन में मदद करती है। इसलिए मनोवृत्तियों में परिवर्तन होना आवश्यक है।

14.09.2020